nwda.gov.in

सामयिक : प्रोजेक्ट के गुण-दोष पर बहस न होना चिंता का विषय

भारत को बदल देगी नदी जोड़ परियोजना!

मोहन गुरुस्वामी
नीति विश्लेषक, वित्त मंत्रालय के पूर्व सलाहकार
@patrika.com

भारत में पानी की विकट समस्या है। फसली क्षेत्रों का साठ प्रतिशत से अधिक हिस्सा अभी भी बारिश पर निर्भर है। कुछ क्षेत्रों में गरीबी की बड़ी वजह सिंचाई के स्रोत का न होना भी है। स्पष्ट है कि सिंचाई के लिए पानी, गरीबी उन्मूलन का अभिन्न अंग है।

अक्सर यह सुनने में आता है कि जिस नदी जोड़ परियोजना के बारे में कई बार बात उठी और फिर दब गई, किसानों को समृद्ध बनाने और भारत को एकजुट करने के दृष्टिकोण के साथ उस परियोजना की जल्द ही शुरुआत होने जा रही है। मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि राष्ट्र एक बार फिर सभी प्रमुख नदियों को जोड़ने की कोशिश करते हुए इतिहास के सबसे बड़ी सिविल इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट की शुरुआत करेगा। इसमें कोई दोराय नहीं होनी चाहिए कि ऐसा प्रोजेक्ट भारत को अपरिवर्तनीय तरीके से बदल देगा। यदि यह परियोजना सफल रही तो भारत की सूखाग्रस्त भूमि का हर एक इंच और हर सूखा गला पानी से तर हो जाएगा।

यदि यह परियोजना असफल रही तो भारतीय सभ्यता, आज जिस भी रूप में मौजूद है, उसका हश्र सिंधु घाटी या मेसोपोटामिया सभ्यताओं जैसा हो सकता है। ये सभ्यताएं प्रकृति के प्रतिशोध के चलते नष्ट हुई थीं। प्रकृति के रुख में रुकावट उत्पन्न करना दुधारी तलवार है। यदि मिस्र में नील नदी पर बने असवान हाई डैम ने नदी की बाढ़ को नियंत्रण में रखा है तो दुनिया की सबसे गहरी और सबसे प्राचीन बैकल झील इसे जलापूर्ति करने वाली नदियों को लगातार मोड़ने से और अन्य कारणों से आज अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी है और यह झील अब तक के सबसे बड़े पारिस्थितिकी संकट से गुजर रही है। अमरीका में भी, हालांकि कोलोराडो नदी पर बनाए गए बांधों के चलते मेक्सिको में प्रवेश करने तक इसके प्रवाह को बहुत हद तक नियंत्रित कर लिया गया है, पर नेवादा और कैलिफोर्निया आज भी पानी की किल्लत का सामना कर रहे हैं। तकनीकी रूप से सक्षम और पारिस्थितिकी तंत्र को अच्छी तरह से समझने वाले लोगों को इस मुद्दे पर बहस करनी चाहिए, लेकिन बहस का न होना चिंता का विषय है।

नदियों को जोड़ने का विचार काफी पुराना है। 19वीं सदी के छठे दशक में सर आर्थर कॉटन ने सबसे पहले इसका प्रस्ताव किया था। सिंचाई मामलों के विशेषज्ञ और पूर्व केंद्रीय सिंचाई मंत्री स्वर्गीय केएल राव ने पिछली सदी में 60 के दशक के अंत में गंगा और कावेरी नदियों को जोड़ने का सुझाव देकर इस विचार को पुनर्जीवित किया। 1977 में पूर्व एयरलाइन पायलट कैप्टन दिनशॉ दस्तूर ने प्रमुख नदियों को जोड़ने वाली 'गारलैंड नहरों' की विशाल अवधारणा सामने रखी। मोरारजी देसाई भी योजना के उत्साही समर्थक थे। 1980 में इंदिरा गांधी के फिर सत्ता में आने के बाद यह विचार ठंडे बस्ते में चला गया। राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने 2002 में स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर अपने संबोधन में यह विचार फिर पेश किया। यह सर्वज्ञात तथ्य है कि राष्ट्रपति अपने संबोधन में वही कहते हैं जो प्रधानमंत्री उन्हें देते हैं। स्पष्ट रूप से अटल बिहारी वाजपेयी के दृष्टिकोण में कैप्टन दस्तूर का मूल विचार निहित था।

भारत में पानी की विकट समस्या है। फसली क्षेत्रों का साठ प्रतिशत से अधिक हिस्सा अभी भी बारिश पर निर्भर है। कुछ क्षेत्रों में गरीबी की बड़ी वजह सिंचाई के स्रोत का न होना भी है। स्पष्ट है कि सिंचाई के लिए पानी, गरीबी उन्मूलन का अभिन्न अंग है। 1950-51 में जब जवाहर लाल नेहरू ने 'आधुनिक भारत के मंदिर' बताते हुए भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी और नागार्जुन सागर जैसी जगहों पर बड़े बांध बनाकर सिंचाई के विस्तार की शुरुआत की तो 133 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि में से केवल 17.4 प्रतिशत यानी 21 मिलियन हेक्टेयर की सिंचाई हो सकी। यह आंकड़ा 80 के दशक के अंत तक 35 प्रतिशत तक पहुंच गया। यह सरकार के लगभग 50,000 करोड़ रुपए के भारी निवेश का परिणाम था।

नदी जोड़ परियोजना विशालकाय है। ब्रह्मपुत्र और गंगा को महानदी से, गोदावरी को कृष्णा नदी से जोड़ा जाएगा जो आगे जाकर पेन्नार और कावेरी से जुड़ेंगी। देश के दूसरी तरफ यह गंगा, यमुना को पौराणिक सरस्वती के कथित मार्ग से गुजरते हुए नर्मदा से जोड़ेगी। मप्र में केन और बेतवा, यूपी में गंडक के साथ कोसी और राजस्थान में पार्वती, कालीसिंध और चंबल नदियों को जोड़ा जाना है। यह परियोजना जब पूरी होगी, तब 30 नदियां आपस में जुड़ी होंगी, 36 बांधों के साथ 10,800 किमी. नहरों के जरिए 1,74,000 मिलियन क्यूबिक पानी को मोड़ा जाएगा। वर्ष 2002 में इस पर कुल 5,60,000 करोड़ रुपए के खर्च का अनुमान लगाया गया था, जिसका अर्थ था अगले दस साल तक सकल राष्ट्रीय उत्पाद का करीब 2 प्रतिशत। अब इसकी लागत दोगुनी या उससे ज्यादा होगी, पर हमारी जीडीपी अब तीन गुना अधिक है जिससे परियोजना का खर्च वहन करना पहले से अधिक आसान हो सकता है।

नदी जोड़ परियोजना के साथ जाने के मूल में सुप्रीम कोर्ट की पीठ का एक आउटपुट भी है। एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने वरिष्ठ अधिवक्ता रंजीत कुमार से मदद मांगी और शीर्षस्थ कोर्ट ने उनकी सलाह स्वीकार करते हुए कहा था, 'एमिकस क्यूरी ने तर्क दिया है कि जोड़े जाने से नदियों में पर्याप्त पानी होगा जिससे न केवल नदी जल बंटवारे के विवाद समाप्त हो जाएंगे, बल्कि नदियों के प्रदूषण स्तर में भी भारी कमी आएगी।' इस विचार में केवल यही समस्या है कि व्यापक निष्कर्ष पर कैसे पहुंचा जाए? विशाल परियोजनाओं के स्वागत के लिए तैयार हमारे राजनेता इस बार भी उत्साहित हैं। और इसके लिए हम एक एमिकस क्यूरी के आभारी होंगे!